नारी नारी की दुश्मन—सच या झूठ

श्रीलता बाटलीवाल

'नारी ही नारी की दुश्मन है' ऐसा सिर्फ़ आम लोग ही नहीं सोचते-कहते बल्कि बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों, संस्थाओं के प्रतिनिधि भी कहते हैं। दुख की बात यह है कि इस एक वाक्य के कहते ही औरतों की समस्याओं पर होने वाला सोच-विचार और चर्चा बंद हो जाती है। सबको इस गंभीर समस्या से छुटकारा पाने का आसान रास्ता मिल जाता है। जब औरत ही औरत के दुखों के लिए जिम्मेदार है तो और लोग क्या कर सकते हैं। इसलिए इस वाक्य की जड़ तक पहुंचना ज़रूरी है ताकि लोगों के मन से इस भ्रम को दूर किया जा सके।

आधा सच-आधा झूठ

नारी नारी की दुश्मन है यह सच भी है और झूठ भी। स्त्री समानता के लिए काम करने वाले लोगों के लिए यह बात समझना बहुत ज़रूरी है ताकि यह वाक्य उनके रास्ते की रुकावट न बन सके।

पहले तो हमें यह समझना चाहिए कि समाज में प्रचलित बहुत-सी धारणाएं जो पहले सच समझी जाती थीं बाद में झूठ साबित हुई। इसलिए कोई बात सिर्फ़ इस कारण सच नहीं मान ली जानी चाहिए क्योंकि लोग ऐसा कहते या मानते आए हैं। हमें उसे आज की कसौटी पर कसना चाहिए। उसके कारणों और प्रभावों की जांच पड़ताल करनी चाहिए।

दो उदाहरण—किसी ज़माने में माना जाता था कि सूर्य और चंद्रमा हमारी धरती के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। बाद में वैज्ञानिक जांच पड़ताल ने इसे झूठ साबित कर दिया।

करीब सौ साल पहले गोरे लोगों का कहना था कि अफ्रीका व एशिया के काले लोगों का सिर छोटा होने की वजह से उनकी अक्ल भी कम होती है। आज संसार के काले लोग हर क्षेत्र में बढ़ चढ़ कर काम कर रहे हैं। ये दोनों ही धारणाएं गलत थीं।

औरत का सवाल

अब हम अपने मुद्दे पर लौटते हैं। दुनिया के हर समाज का ढांचा अन्याय और शोषण पर आधारित है। खासतौर पर जो अपने आपको जितना ज़्यादा सभ्य मानते हैं वहां शोषण उतना ही अधिक है। आदिवासियों के समाज में आज भी यह कम है।

हमारे देश का हिंदू समाज जाति, वर्ग वगैरह के भेदभाव पर बना। पहले ये भेद इतने कठोर नहीं थे लेकिन धीरे-धीरे ऊंची जातियों ने शूद्रों और दलितों को पशुवत जीवन जीने पर मजबूर कर दिया। खुद शूद्र भी अपना नीचा दर्जा स्वीकार करने लगे। उसे अपने भाग्य और कर्मों का फल कहने लगे। अपने बच्चों को वही सिखाने लगे। इसका मतलब यह नहीं कि वे अपने ही दुश्मन थे या सब उनकी इच्छा से हुआ।

समाजीकरण बहुत बड़ी ताक़त है। वह मनुष्य की पूरी सोच को बनाती है।

औरतें भी उन्हीं विश्वासों, मूल्यों और आदर्शों को स्वीकार कर लेती हैं जो उन्हें जन्म से सिखाए जाते हैं।

सत्ता की लड़ाई

इस समाज में औरत को घर की चार दिवारी के भीतर छोटी-सी जगह मिली है जबकि पुरुष का कार्यक्षेत्र पूरी दुनिया है। घर के भीतर भी बड़े फ़ैसले मर्द के हाथ में है। औरतों के पास भी उतनी ही बुद्धि, क्षमता, काम करने की इच्छा है जितनी पुरुष के पास। वह भी काम से संतोष, प्रशंसा और ताक़त पाना चाहती है। अब छोटे से दायरे में अगर एक और औरत आ जाएगी, ताक़त का बंटवारा होगा तो झगड़ा स्वाभाविक है। जहां भी औरतें घर के बाहर काम करती हैं, उनकी स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ति के लिए बड़ा क्षेत्र मिलता है ये झगड़े कम होते हैं। तब पत्नी और मां अपने बलबूते पर भी सम्मान पाती है, उसे पुरुष के रिश्ते की बैसाखी नहीं चाहिए।

जहां भी औरतों के झगड़ों और इर्ष्या की बात उठती है हमें पूछना चाहिए क्या पुरुष पुरुष का दुश्मन नहीं? देशों के बीच आपसी युद्ध पुरुषों की ही देन हैं। वर्ग, नस्ल, रंग, संप्रदाय को लेकर फैल रही नफ़रत और मारकाट पुरुषों का ही काम है। दो महायुद्ध और हिरोशिमा नागासाकी का भीषण नरसंहार करने वाले भी पुरुष ही थे। इतिहास के पन्ने इसकी गवाही देते हैं।

सारांश

मैं यह भी नहीं मानती कि पुरुष औरत का दुश्मन है। औरत की दुश्मन तो वह व्यवस्था है जो उसे आज़ादी से जीने नहीं देती।

स्त्री हो या पुरुष, हम सभी एक अन्यायी ढांचे में फंसे हुए हैं। एक दूसरे को दोष देने से हल नहीं निकलेगा। हम सबको मिल कर इस ढांचे को बदलने की तरकीब खोजनी होगी। □